कवर चित्र नं. 4 (सीढ़ी):-

ज्ञानियों, महात्माओं और दार्शनिकों ने पुरातन समय से ही मनुष्य के जन्म से पूर्व और मृत्यु के बाद के रहस्यों को जानने का बहुत प्रयास किया है। चूँकि इस्लाम और क्रिश्चियन धर्मों में आत्मा के पूर्वजन्मों को मान्यता नहीं दी गई है; इसलिए उन धर्मखण्डों के साहित्य या धार्मिक पुस्तकों में इस विषय पर कोई चर्चा नहीं की गई है; किंतु भारत में पूर्वजन्म की मान्यता सदियों से रही है; इसलिए इससे सम्बंधित ग्रंथों या पुस्तकों की कोई कमी नहीं है; किंतु केवल एक भूल के कारण भारतवासी अपने स्वर्णिम इतिहास और विश्व की अनेक सभ्यताओं और धर्मों के उद्भव एवं विकास में अपने योगदान को भूल गए हैं। वह भूल है देह-अभिमान के कारण यह समझना कि आत्मा 84 लाख योनियों में जन्म लेती है। फिर भी भगवान के अवतरण एवं मनुष्यों के पूर्वजन्मों को मान्यता देने के कारण ही भारत आज शिव भगवान की कर्मभूमि बना है।

Cover Picture No.4
कवर चित्र नं. 4

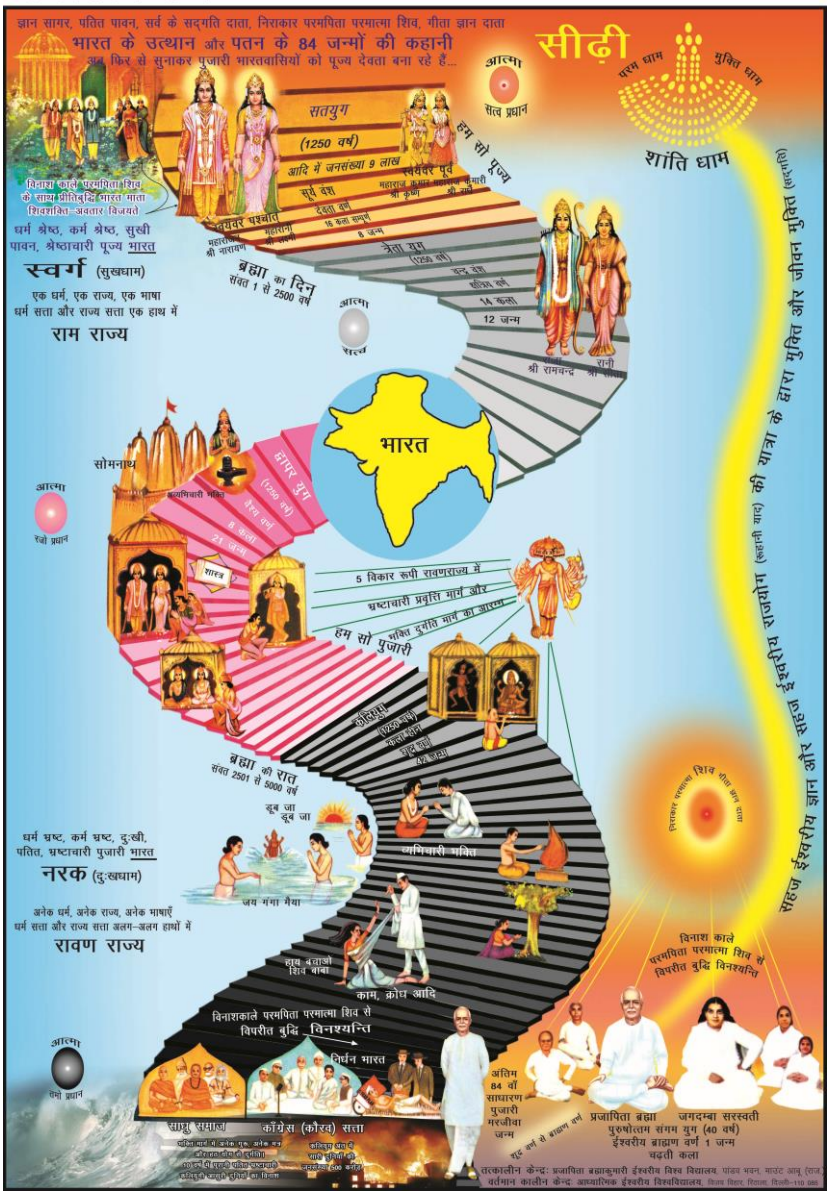

परमपिता शिव ही आकर मनुष्य-आत्माओं को उनके अनेक जन्मों की कहानी सुनाते हैं। चूँकि वे ही जन्म-मरण के चक्र से न्यारे हैं और त्रिकालदर्शी हैं। वे आकर सबसे पहले इस भ्रम को मिटाते हैं कि मनुष्यात्मा अपने कर्मानुसार मनुष्य के रूप में ही पुनर्जन्म लेती है, न कि पशु-पक्षियों के रूप में। चूँकि भारत ही सारे विश्व की सभ्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों का उद्गम स्थल है; इसलिए वे परमपिता शिव आकर पहले **भारत के उत्थान और पतन की ही कहानी** सुनाते हैं। शिव भगवानुवाच है कि 'मनुष्यात्मा इस 5000 वर्ष के ड्रामा में या सृष्टि-चक्र में अधिक से अधिक 84 जन्म लेती है, न कि 84 लाख योनियों में भ्रमण करती है।' (जैसा कि पहले अध्याय में स्पष्ट किया गया है।)